धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

अप्रैल 2010

* देवात्मा फरमाते हैं

* देवात्मा के मिशन की अन्तिम विजय

* महिला आरक्षण

* विनम्रता की परिभाषा

* वैभव लक्ष्मी व्रत

* शुभ संग्राम

* पाठकों के पत्र

हम कैसे प्रचारक चाहते हैं

परम पू0 भगवान देवात्मा फरमाते हैं -

हम ऐसे प्रचारक चाहते हैं, जो केवल सभाएं कराकर या इर्द गिर्द के नाना गावों में दौरा करके ही तसल्ली न पा लेते हों, बल्कि वह अपनी ज़िन्दगी से कोई उच्च फल पैदा करते हों, जैसे भाई तख़्तसिंह जी ने यह ब्रत लिया था कि मैं जब तक पचास हजार रुपए दान में एकत्र न कर लूंगा, तब तक वापिस न आऊंगा। एक स्त्री ने भी यह ब्रत लिया था कि मैं जब तक पचास हज़ार रुपये एकत्र न कर लूंगी, तब तक वापिस न आऊंगी। इसी प्रकार तुम्हारे सामने भी कोई उच्च लक्ष्य होना चाहिए कि जब तक मैं इतना काम न कर लूंगा, तब तक चैन न पाऊंगा। इसमें जो तकलीफ़ आवे, उस को बरदाशत करना चाहिए। अपने आप को असहाय, अंधकारग्रस्त, दुर्बल और तुच्छ समझ कर सच्चे और सरल भाव से देवआत्मा से देव ज्योति और देव तेज की प्रप्ति के लिए सहाय प्रार्थना करनी चाहिए। यदि दिल श्रद्धावान होगा और तुम्हारी प्रार्थना भी सच्ची होगी, तो सहायता मिलेगी, ऐसी सहायता मिलने पर जो फिर एक और कठिनाई साधारणत: खड़ी हो जाती है, वह यह कि जब इस प्रकार उस फल को अपने साथ सम्बधित करके फूलने व अकड़ने लगता है और घमंड के महा नीच भाव से भर जाता है। वह झूठ मूठ यह अनुभव करने लगता है कि यह काम मैंने किया है जब कि सत्य यह है कि वह काम उस की शक्ति से नहीं हुआ। यदि उस की ताकत से हुआ होता, तो चन्द दिन पहले वह क्यों न हो गया होता? ऐसे घंमड भाव से बहुत बचने और चौकस रहने की आवश्यकता है। जब दिल पर घंमड का भूत सवार होता है, तब ही देव तेज के पहुंचने के सब दरवाजे बंद हो जाते हैं। इसलिए देव ज्योति और देव तेज के द्वारा जो उच्च फल पैदा होते हैं, वह फल पैदा होने से रह जाते हैं। सदा दीन भावी और श्रद्धावान बने रहने का संग्राम करो और घंमड भाव से डरो। जब किसी आत्मा का हृदय घंमड से भर जाता है, तब उस में ज्योति पंहुचनी बंद हो जाती है।

तुम्हारे सामने पहले यह लक्ष्य हो कि मैंने यह भला नतीजा पैदा करके छोड़ना है और फिर उसके लिए सब प्रकार का आवश्यक त्याग और समर्पण किया जावे, तब अवश्य, जहां तक संभव है कामयाबी होगी। दूसरी बात जिसकी नितान्त आवश्यकता है, वह यह कि निज के साधन सच्चे साधन हों और उनमें दिनों दिन अधिक से अधिक बेहतरी आवे। केवल कुछ पाठ विचार करके और महिमा स्मरण का साधन करके सन्तुष्ट न रहना चाहिए बल्कि सच्चे मोक्ष और विकास विषयक साधनों का क्रम चलने की आवश्यकता है। जब तक सिलसिला ठीक न चलेगा, तब तक हृदय शुद्ध नहीं होगा और भलाई का रास्ता नहीं खुलेगा। किसी अपराध को स्वीकार कर लेना और बात है और उसका सच्चा परिशोध करना और बात है। मेरी ऐसी आकांक्षा है कि तुम्हारे ऐसे मोक्ष और विकाश विषयक सच्चे साधन चल सकें, ताकि तुम्हारी

शेष पेज 9 पर

धर्म जीवन

खण्ड 22 अंक 4

अप्रैल 2010

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

देवआत्मा के मिशन की अंतिम विजय

(सत्यदेव संवाद)

मनुष्य जगत में नारकिय लीला को मिटाने के लिए नेचर के विकासकारी अटल नियम के अनुसार आखिरकार देवआत्मा का आविर्भाव हुआ है। अब प्रश्न यह है कि क्या देवआत्मा के प्रगट होने पर मनुष्य जगत ने उनका स्वागत किया है और उनका काम निर्विघ्न रूप से बराबर चलता है या अब चल रहा है? शोक, इसका उत्तर नाकारात्मिक है क्योंकि नेचर में जो विकास का क्रम जारी है, वह बहत धीरे चल रहा है और बहुत डेढ़ा तिरछा है। इसमें कई बार बड़ी निराशाएं और अंधेरा आता है। यह कार्य चलते-चलते विनाशकारी शक्तियों के प्रबल आक्रमण से कई दफा ऐसा प्रतीत होता है कि बंद होता नजर आने अगता है, परन्तु आखिरकार फिर उसका क्रम आरंभ हो जाता है और अंत में वह समय आ जाता है जबकि उस कार्य को विनाशकारी शक्तियों पर पूर्ण विजय प्राप्त हो जाती है। इस नियम के अनुसार क्या यह सच नहीं कि एक समय था जबकि हमारा देश उस समय की सभ्यता के अनुसार सारी दुनिया में बढ़िया दर्जा रखता था। उस समय के मनुष्यों की बुद्धि, सभ्यता, खेतीबाड़ी और व्यापार आदि के काम बहुत विशेष थे, परन्तु धीरे-धीरे ऐसे हालात पैदा हो गए कि विकास के क्रम पर विनाशकारी शक्तियों ने बहुत अधिक अधिकार पा लिया और वह देश सभ्यता के विचार से सारी सभ्य दुनियां के विचार से बहुत नीचे चला गया। विशेषकर हिन्दु जाति का बहुत बुरा हाल हो गया। अब प्रश्न यह है कि क्या इस पर नेचर का विकासकारी कार्य बंद हो गया? नहीं, आखिरकार इसी भारतवर्ष और हिन्दु जाति को यह सबसे बड़ी योग्यता प्राप्त हुई है कि उसमें एक ऐसा बढ़िया खानदान वर्तमान है कि जिसमें सारे जगत के सरताज सच्चे देवरूपधारी भगवान देवआत्मा प्रगट हो गए। इस विचार से इस देश और जाति का दर्जा सबसे बढ़िया हो गया। फिर क्या यह भी सच नहीं कि 1914 से 1918 तक जर्मनी का इंग्लैंड और फ्रांस के साथ जो बहुत भयानक युद्ध जारी रहा था, उसमें आरंभ के बहुत लम्बे समय तक जर्मनी की ही विजय होती रही और अंग्रेज और फ्रांस के देश बुरी तरह हार खाते रहे। परन्तु आखिरकार जर्मनी बहुत बुरी तरह पराजित हुआ और अंग्रेज ओर फ्रांस के देशों को विजय प्राप्त हुई और जर्मनी जो अपने बहुत अत्याचारी व्यवहारों से विकास के क्रम को

बुरी तरह कुचलना चाहता था, उसमें वह सफल न हो सका इसी प्रकार फिर भी जर्मनी, रूस, इटली और जापान के डिक्टेटर जिस प्रकार सारी दुनिया की सभ्यता को मिट्टी में मिलाते जा रहे थे और इस दुनिया में असीम अत्याचार की पिशाच लीला पैदा कर रहे थे उससे ऐसा प्रतीत होता था कि अंग्रेज लोग बहुत परेशान और हानि उठा रहे हैं, और ऐसा प्रतीत होता था कि अब इन डिक्टेटरों का ही राज्य सारी दुनिया में हो जाएगा। परन्तु ऐसा कभी नहीं हो सकता। नेचर की शक्तियों की तुलना में एक हिटलर क्या हजारों और लाखों हिटलर भी कुछ हकीकत नहीं रखते। वह आखिरकार बुरी तरह पराजित होने के लिए ही हैं। मनुष्य जगत में अब तक जितना सभ्यता और आजादी का विकास हो चुका है, मानवता उसे किसी भी तरह खो देने को तैयार नहीं हो सकती। आखिरकार वह समय आ जाएगा जबकि यह हालात बदलेंगे और डिक्टेटरों को बुरी तरह परेशान होना पड़ेगा। इसी प्रकार नेचर में देवआत्मा के आविर्भाव की सफलता में भी बहुत रुकावटें आई हैं और आती रहती हैं और एक समय तक आती रहेंगी, परन्तु फिर आखिरकार वह समय आ जाएगा जबकि सारी दुनिया भर में इस आविर्भाव और उसके कार्य की सच्ची महिमा और आवश्यकता प्रगट होगी और निर्विघ्न रूप से उसी प्रकार कार्य चलेगा जिस प्रकार अब मानसिक शिक्षा की उन्नति का क्रम बराबर जारी है। इसमें किसी को किसी प्रकार का भी कोई शक शुबा नहीं हो सकता। अब इस आरंभ के दिनों में तो देवआत्मा को अपने सर्वोच्च मिशन के कार्य के चलाने के लिए वह कौन सी कठिनाई या विरोधता है कि जिसमें से गुजरना नहीं पड़ा? धन की कठिनाई अनेक बार आई हां, साधारण आवश्यकताएं पूरी करने में भी बहुत विघ्न हो गए हैं। एक-एक बार भगवान देवआत्मा को अपने घर का फालतू सामान तक बेचना पड़ा है। इज्ज़त के विचार से भी अनेक बार ऐसे-ऐसे बुरे सलूक हुए हैं और इस प्रकार के गंदे अभियोग लगाए गए हैं जिसकी कोई सीमा नहीं। शारीरिक आक्रमणों के विचार से भी केवल ईंटें और रोड़े मारने तक सबर नहीं किया गया, लालटेनें और बैंच तोड़ने तक ही अपनी शरारत को बंद नहीं रखा गया, बल्कि उनकी जान पर गोलियां तक चलाने का महा पाप करके उन्हें समाप्त करने की कोशिश की गई है और ऐसे गुमनाम इश्तहार छापे गए हैं कि क्या कोई निहंग ऐसा नहीं है कि जो उनकी जान ले ले। इसके अतिरिक्त झूठे मुकदमों की भी भरमार रही है। एक-एक जन ने यह दावा किया है कि देवधर्म मिशन को गारत करना मेरे जीवन का मिशन है। एक-एक बागी परिवारक जन और एक-एक बागी सेवक या कर्मचारी की ओर से वह-वह अत्याचार हुआ जिसकी कोई सीमा नहीं। हां, एक-एक जन ने देवआत्मा के मिशन को गारत करने के लिए 70-70 हजार तक ट्रेक्ट पब्लिक में बखेरे हैं। एक-एक जन ने यह दावा किया है कि मैं ऐसे हमले करूगां कि देवआत्मा जांबर न हो सकेंगे। परन्तु आखिरकार इन सब अद्वितीय विरोधताओं का क्या फल हुआ? यही कि देवआत्मा ही विजयी होते रहे हैं और उनके कार्य का क्रम बराबर आगे बढ़ता रहा है और भगवान देवआत्मा अपने सामने अंधेरा ही अंधेरा देखते रहे हैं परन्तु देवआत्मा कभी भी इस कार्य की वफादारी से पीछे नहीं हटे। उन्होंने एक बार अपने दिल का हाल इन

शब्दों में प्रगट किया था- सब विरोधी हालात मानो जोर-जोर से यह पुकार रहे थे कि तू इस पृथ्वी में ऐसे जीवन व्रत की सिद्धि की आशा न कर और दूसरी ओर मैं ऐसी आवाज के उत्तर में यह कह रहा था कि मेरे लिए अब कोई और रास्ता नहीं है। मैं अपने जीवन व्रत के लिए अवश्य सच्चा रहूंगा। मैं उसके लिए सब प्रकार की विपद में पड़ूंगा, मैं उसके लिए हरेक बिमारी और हरेक छोटे बड़े अघात को ग्रहण करूंगा। मैं उसके लिए आवश्यकता होने पर प्रत्येक संबंधी और प्रत्येक वस्तु का त्याग करूंगा। मैं उसके लिए प्रत्येक बदनामी सिर पर लूंगा। कंगाल और भिखारी बन जीऊंगा परन्तु जब तक मेरे शरीर में दम रहेगा तब तक उससे बेवफा न हूंगा और यदि नेचर में उसकी जय अवश्यक होगी (जैसा कि आवश्यक है) तो मैं उसके लिए सब प्रकार के आवश्यक त्याग विषयक साधनों में से गुजर कर आखिरकार कृतकार्य हूंगा और अपनी सब प्रकार की विरोधताओं और अपने सब प्रकार के विघ्नों पर जय लाभ करूंगा।

इसी प्रकार एक बार असीम विरोधताओं के समय भगवान देवआतमा ने यह फरमाया था- ऐसी कई अवस्थाओं में मेरे हृदय में एक-एक बार यहां तक ख्याल आया कि यदि मैं इस अद्वितीय संग्राम में निधन भी हो जाऊं और हमेशा के लिए अपने सारे अस्तित्व को भी खो दूं, तो भी मेरे लिए इससे बढ़कर और कोई सौभाग्य और गौरव नहीं है कि मैं अपने इस अद्वितीय व्रत को पूरा करूं। वाह! देवआत्मा का अपने मिशन की जय के लिए कितना बेअंत त्याग और कैस महान कुर्बानी!! क्या इससे बढ़कर कुर्बानी का कोई और दृष्टांत होना सम्भव है? कदापि नहीं।

अब एक ओर देवआत्मा की अपने अद्वितीय मिशन की जय के लिए उपरोक्त असीम कुर्बानी है और दूसरी ओर उनके भीतर नेचर के विकास के अटल नियम और उसके अनुसार अपने मिशन की अंतिम विजय पर वह पूर्ण विश्वास है कि जिसकी कोई सीमा नहीं। वह अपने एक लेख में अपने दिल का हाल इस शब्दों मे फरमाते हैं- विशेष प्रकार के उच्च गुणों से जो लोग खाली हैं, वह न तो देवआत्मा के साथ कोई आत्मिक संबंध रखते हैं और न और आत्माओं की भलाई का ही कोई उच्च या जोरदार भाव रखते हैं। परन्तु मैं जानता हूं और साफ प्रकार से देखता हूं कि नेचर का विकासकारी नियम और कार्य अटल है। मेरी जो शुभ इच्छा आज पूरी नहीं होगी, जो एक महीने तक पूरी नहीं हो सकती, वह 6 महीने या साल भर में पूरी होगी। ठीक समय के आने पर जरूर पूरी होकर रहेगी। इसी तरह एक और जगह पर भगवान देवआत्मा ने यह फरमाया है- देवआत्मा अपनी देवज्योति में साफ देखते हैं कि नेचर के जिस विकासकारी विभाग ने उन्हें प्रगट किया है, उसके द्वारा उनके परम लक्ष्य के पूरा होने के लिए जैसे अब तक उन्हें धीरे-धीरे कई प्रकार के अनुकूल हालात या सामान मिलते गए हैं, वैसे ही समय के साथ-साथ आइंदा भी मिलेंगे, क्योंकि देवआत्मा का प्रकाश, उनका परमलक्ष्य स्वयं अपने आप नहीं बल्कि नेचर के ही विकासकारी नियम और नेचर की विकासकारी शक्तियों को लाखों वर्षो के परिवर्तन का फल है और इसीलिए उनका यह अद्वितीय लक्ष्य जबकि नेचर से है और नेचर के ही परम हितकर उदेश्य के पूरा करने के लिए है, तब उसका न केवल उनके जीवन में, बल्कि उसके पश्चात भी समय के

साथ-साथ धीरे-धीरे उन्नति करना एक ऐसा आवश्यक नतीजा है कि जिस पर उनका पूर्ण विश्वास है और जिस पर विश्वास की तुम सब में तुम्हारी योग्यता के अनुसार पैदा होने और बढ़ने की आंवश्यकता है। इसलिए देवआत्मा ने जिस आत्मिक दुनिया की दुर्लभ सच्चाईयों को अपनी देवज्योति में देखा और प्रगट किया और अपने लेखों और पुस्तकों के द्वारा उन्हें प्रकाशित किया है, वह धीरे-धीरे निश्चय इस दुनिया में फैलेंगी और देवआत्मा का विजय पताका देश-देश और गांव-गांव में लहराएगा और समय के साथ देवधर्म का प्रचार करने के लिए अधिक से अधिक योग्य जन भी पैदा होंगे।

भगवान देवात्मा का उपरोक्त फरमान पूर्णत: सच है। देवसमाज को अभी इस दुनिया में स्थापन हुए थोड़ा समय गुजरा है। इस समय में क्या धन सम्पत्ति के विचार से, क्या जनों के विचार से, क्या संस्थाओं के विचार से, क्या विरोधियों पर विजय पाने के विचार से देवसमाज ने जो आश्चर्यजनक उन्नति प्राप्त की है, वह जानने वालों से छिपी हुई नहीं है। 1887 का वह जमाना जबकि एक किराए के मकान में देवसमाज की स्थापना हुई थी, हम अपने सामने लाएं और फिर उसका वर्तमान समय से तुलना करें, इससे धीरे-धीरे नेचर के विकास के अटल नियम की विजय का प्रमाण मिल जाएगा। यही अटल नियम आगे भी अवश्य अपना काम करता रहेगा और आखिरकार वह जमाना आकर रहेगा जबकि सारी दुनिया में इसी प्रकार सच्चाई और भलाई का राज आएगा और झूठ और बुराई का राज खत्म होगा। अत्याचार जाएगा और न्याय का राज होगा कि जिस प्रकार लाखों वर्षो के जमाने में आखिरकार पशु जगत पर मनुष्य जगत का पूर्ण राज हो गया है। अब आवश्यकता यह है कि इस आरंभ के जमाने में जिन लोगों को भगवान देवआत्मा की शरण में आने का महा सौभाग्य मिल गया है, वह उसकी सच्ची कदर करें और नेचर के विकासकारी कार्य और उसके अनुसार देवआत्मा के मिशन की पूर्ण विजय पर पूरा विश्वास रखें और यह भी निश्चय करें कि भगवान देवआत्मा के लिए वफादार रहने और सच्चा धर्म जीवन पाने में उनके अस्तित्व का जो गौरव है, उनके लिए इस दुनिया में और अगली दुनियां में जो बेअंत बरकतें है, उनसे बढ़कर उनके लिए करने की कोई और वस्तु नहीं है। हमारी यह दिली कामना है कि हम इस बात के पूर्ण विश्वासी बन सकें कि नेचर में विकास का नियम और कार्य अटल है और उसकी धीरे-धीरे जय होनी आवश्यक है और इसके साथ यह भी पूरा निश्चय करें कि नेचर के इस नियम के अनुसार देवआत्मा के मिशन की भी धीरे-धीरे विजय होते जाना आवश्यक है और हमारे अस्तित्व की भी इस नियम का साथ देने में ही रक्षा और सफलता है।

याद रखें कि यदि हम विकास के साथी नहीं बनते, अपने सामने मिशन की हानि देखकर मूक दर्शक बने हुए हैं, तो हम अपना वा मिशन का नाश कर रहे हैं। छोटे-छोटे स्वार्थ हमें कायर बना देते हैं। गुरू मिशन को उन्नत करने के लिए साहसी वा धार्मिक वृति के लोगों की अवश्यकता है। पड़ताल करें कि हम किस श्रेणी में आते हैं? देवात्मा के मिशन की हानि को रोकने वा उसको उन्नत करने के लिए हम क्या कर रहे हैं? (नोट)

महिला आरक्षण

आज 8 मार्च को Woman's Day के रुप में मनाया जाता है। इस पुरुष प्रधान समाज में पुरुषों में जाग्रति पैदा करने के लिए यह एक अच्छा प्रयास है। आज के युग में जब कि महिलाऐं हर क्षेत्र में अग्रणी भूमिकाऐं निभा रही हैं, परन्तु फिर भी वह तिरस्कृत हैं, उन्होंने बहुत से क्षेत्रों में पुरुषों के बराबर ही नहीं, उनसे अग्रणी मुकाम हासिल किया है। करनाल में जन्मी कल्पना चावला ने आसमान की ऊंचाईयों को छू लिया है।

परन्तु फिर भी महिलाओं की हालत सुधरी नहीं है। जहां पिछड़े इलाके हैं, उन महिलाओं की ही दुर्दशा नहीं, बल्कि हमारी सभ्य वा पढ़ी लिखी जनता में भी औरतें बहुत नारकिय जिन्दगी जी रही हैं। जिन्दगी के संघर्ष में वह बेहाल हैं। पढ़ लिखकर नौकरी करना इस मंहगाई के समय में अवश्यक हो गया है, नौकरी के साथ घर सम्भालना, पति और बच्चों को सम्भालना, घर में बज़ुरगों की देखभाल और रिश्तेदारियां निभाना, महमानों की देखभाल करना आदि किसी काम में भी कमी नहीं आती। बिना नौकरी के भी यह काम full Time Job है, परन्तु नौकरी के साथ यह सब कुछ निभा पाना, एक महिला ही कर सकती है। यदि मदद करने के लिए कोई नौकर आदि का प्रबन्ध हो भी जाए, तो भी घर की ज़िम्मेवारियां ख़त्म नहीं होती। नौकरी में भी कितनी समस्याओं से जूझना पड़ता है।

इतना संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत करके भी यदि उसके साथ घर में सहयोग न हो, व्यवहार अच्छा न हो, उसकी इस व्यस्तता की कोई कदर वा प्रशंसा न हो, उल्टा उस को बुरा व्यवहार मिले तो जीवन किस कदर कष्टदायक हो सकता है, उसका अनुमान एक एक घर की महिला की कहानी बताती है।

अब महिला दिवस (Women's Day) के अगले दिन औरतों के हक में 33% महिला आरक्षण का बिल राज्यसभा में पास हो गया है। इसके लिए मिली जुली प्रतिक्रियाएं आ रही हैं। पुरुष वर्ग में से कुछ तो भयभीत हैं कि उन्हें महिलाएं राजनैतिक क्षेत्र में भी मात न दे दें, कुछ पूर्वाग्रहों से ही ग्रस्त होते हैं, कि पुरुषों को ही बाहर की राजनीति में भाग लेना चाहिए, औरतों का काम घर वा बच्चे सम्भालना है। जब महिलाएं 8-8 घण्टे नौकरी करती हैं तो उन्हें कोई कष्ट नहीं होता। राजनीति में आने के बाद भी महिला किस सीमा तक स्वतन्त्र फैसले ले सकेंगी, पुरुष अपने को कहां तक उन पर नहीं थोपेंगे यह भी एक विचारणिय विषय है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि पुरुष प्रधान समाज में यह एक सराहनिय कदम है, परन्तु राजनीति में जिस प्रकार भृष्टाचार का बोलबाला है, क्या महिलाओं के आने से इसमें कोई करिश्मा होना की सम्भावना है? हरगिज़ नहीं। क्योंकि राजनीति शुद्ध रुप से न महिलाओं से चलेगी न पुरुषों से, इसके लिए उच्च कोटि की मान्सिक योग्यता, प्रबन्धन की योग्यता और उच्च कोटि की हार्दिक योग्यता की अवश्यकता है, वह चाहे पुरुष में हो यो स्त्री में। पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में नेकी

अधिक होती है क्योंकि वह उन पापों में अधिकतर लिप्त नहीं होती, जिनमें आम पुरुष वर्ग देखा जाता है। डर है कि यह रोल महिलाओं को भी उस कैटागरी में न ला दे।

हमने अपने कालिज में एक नाटक किया, जिसमें दिखाया गया कि स्त्री पुरुष के हाथों प्रताड़ित है, वह दुखी होकर ब्रह्मा जी के पास जाती है कि ब्रह्मा जी, आप पुरुष और स्त्री का रोल बदल दो ताकि पुरुष को पता लगे कि वह हमें किस कदर सता रहे हैं। ब्रह्मा जी ने ऐसा ही किया, पुरुष घर का काम करने लगा और स्त्री बाहर के काम करने लगी। कुछ ही दिनों में स्त्री शराब में धुत घर में आती है और अपने पति को उसी प्रकार ही प्रताड़ित करती है। कुछ दिनों के बाद पति भी ब्रह्मा जी के पास गया और अपना दुख रोने लगा, तो बह्मा जी फरमाते हैं कि "ऐ पुरुष मैं क्या करुं, जब से मैंने पति पत्नी का रोल बदला है, स्वर्ग लोग में भी तुफान आया हुआ है। सब अपनी पत्नियों के हाथों से बेहाल है। मैं स्वंय सरस्वती से तंग आ गया हूँ, करुं तो क्या करुं, यह काम किस को सौंपू जो घरों में शान्ति रहे।" इतने में खुसरे आ जाते हैं और तालियां बजाते हुए कहते हैं कि ब्रह्मा जी यह सत्ता हमें सौंप दो।

ब्रह्मा जी और रोल बदलना, सब काल्पनिक है, परन्तु इसका बहुत गहरा अर्थ है कि सत्ता जिसके हाथ में भी आ जाती है, वह उसको भ्रष्ट कर देती है।

हमारी राजनीति में कुछ उच्च चरित्रवान वा निष्टावान महिलाएं भी हैं, परन्तु जय ललिता वा मायावती भी हैं। मायावती गरीबों का मसीहा बनकर उभरी थी, परन्तु गरीब तो उसको भूल गए और सत्ता के नशे में अन्धी हाकर गरीबों का पैसा अपनी हवसों पर कई सौ करोड़ की गिणती में खर्च कर रही हैं। ऐसी मायावतियां बहुत स्थानों पर उभर कर आ रही हैं।

सरांश यह है कि राजनीति हो या और समाजें वा संस्थाएं, वहां के प्रबन्ध के लिए नेक जीवन धारी पुरुष स्त्रियों की अवश्यकता होती है, किसी लिंग भेद से हालात नहीं सुधरते। सत्ता की भूख स्त्री में हो या पुरुष में उसे निकृष्ट बनाकर अपनी, अपनी समाज की अपने देश की बर्बादी करने के लिए मजबूर कर देती है। सत्ता की भूख मनुष्य को साहसी बना देती है और उसकी निकृष्टता से नेक जीवन धारी भयभीत हो जाते हैं, यह घटनाक्रम सदियों से चलता आ रहा है और चलता रहेगा, जब तक किसी देश, समाज और संस्थाओं में काम करने के लिए नेक जीवन धारी, साहस रखने वाले, सचाई का साथ देने के लिए भीरु न बनने वाले जन आगे नहीं आएंगे।

इस सारे घटना क्रम में एक और हितकर संकेत मिला है कि सरकार और विरोधी दल इस महिला आरक्षण के अच्छे मुद्दे के लिए इकट्ठे हुए हैं, यदि यह सिलसिला और देश भलाई के फैसलों में भी चलता रहे तो हमारा देश बहुत सुदृड़ हो जाएगा। यह रिवायत चली थी, जो धीरे धीरे स्वार्थी राजनितिज्ञों के रहते बन्द हो गई।

जब आज़ादी प्राप्त हुई थी, तो कांग्रेस का बोल बाला था, परन्तु सरकार का गठन हुआ तो

उन जनों को कैबिनेट में चुना गया जो कई गैर कांग्रेसी थे, उन्हें महत्वपूर्ण विभाग भी सौंपे गए। मद्रास के व्यवसाई को वितमन्त्री बनाया गया। अकाली दल के नेता बलदेव सिंह को प्रतिरक्षा का भार सौंपा गया।

सबसे चौंकाने वाली नियुक्ति बी, आर अम्बेदकर की हुई। 1930 - 40 में अम्बेदकर कांग्रेस के कड़े अलोचक वा विरोधी रहे थे। महात्मा गांधी पर भी उन्होने कड़े हमले किए थे। परन्तु महात्मा गांधी जी ने ही पहले नहरू जी को परामर्श दिया था कि अम्बेदकर को कैबिनेट में लिया जाए। इस कांग्रेस विरोधी को कानून मन्त्री के साथ ही भारतिय संविधान का निर्माण करने वाली कमेटी का अध्यक्ष भी बनाया गया। इस भली सोच के भले नतीजे आए, संविधान के निर्माण का प्रशंसनिय काम उनके नेतृत्व ने कर दिखाया।

जनतन्त्र के लिए बहस और असहमति अवश्यक है, परन्तु देश हित में, समाज हित में निर्णय लेने में सहमति दिखाने का साहस दिखाना एक शुभ संकेत है। किसी देश, समाज, संस्था में भृष्टाचार का सामना एक जुट होकर और साहस दिखाकर ही किया जा सकता है, पक्षपात, डर, स्वार्थ वा भीरूपन से नहीं।

रचनात्मिक सहभागिता ही देशों और समाजों को ऊंचा उठाती है।

सुरजीत बराड़

पेज 2 का बाकी

आत्मिक सच्ची भलाई का पथ खुल सके और तुम यहां पर अपने स्थूल शरीर को छोड़ने के अनन्तर उच्च लोकों में प्रवेश करने के अधिकारी बन सको। जैसे जिसके सचमुच की आंख नहीं है, वह यदि बनावटी आंख लगा लेवे, तब इससे देखने का काम नहीं हो सकता। वैसे ही यदि कोई जन अपनी नीच शक्तियों को छिपाए रखने का संग्राम करे, तो वह इसके बुरे फलों से बच नहीं सकता। इसलिए नितान्त आवश्यक है कि तुम्हारे मोक्ष विषयक सच्चे साधन चलें और उनके द्वारा तुम्हारे हृदय शुद्ध वा निर्मल हों और तुम्हारे भीतर उच्च भावों के विकास का क्रम आरम्भ हो।

मैं तुम्हारा गुरू होकर अपना यह बहुत बड़ा कर्तव्य समझता हूं कि जो कुछ तुम्हारे लिए हानिकारक देखता हूं और तुम उसे नहीं देखते, उसके विषय में तुम्हें अपनी ज्योति प्रदान करूं, फिर चाहे तुम उसे लात मार कर परे ही फेंक दो। देखो घमंडी आत्मा को नेचर की ओर से कितना बड़ा दंड मिलता है कि उसकी भलाई के सब रास्ते बंद हो जाते हैं और उसे कुछ दिखाई नहीं देता। इसलिए घमंड के महा हानिकारक रोग से बचने और दीन भावी होकर देवात्मा के देव प्रभाव पाने और अधिकारी रहने की नितान्त आवश्यकता है।

विनम्रता की परिभाषा

विनम्रता को परिभाषित करना बहुत कठिन है। किसी सत्ताधारी, पदधारी के आगे झुकना और विनम्र बने रहना, विनम्रता नहीं, निहित स्वार्थ है। एक एक जन अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए उन जनों के पैर भी पकड़ लेता है, जिनको कल तक गालियां निकालता था। सब राजनैतिक नेता अकसर ऐसा करते हुए देखे जाते हैं।

कई बार जो मनुष्य अपने आत्म सम्मान से ग़ल्त बात के आगे नहीं झुकता, उसे घमंडी वा अहंकारी का दर्जा दे दिया जाता है। जिन को विनम्रता, अंह, घमंड की प्राथमिक परिभाषा भी पता नहीं होती, वह भी बड़े बड़े उच्च जीवन धारियों को भी ऐसे फतवे दे देते हैं, क्योंकि न तो उन्हें अपनी गठन का पता होता है और न औरों की गठन का। विनम्रता दूसरों के गुणों के आगे झुकाती है, पद वा सत्ता के आगे नहीं। खुशवन्त सिंह जी बहुत महान लेखक हैं, उन्होंने लिखा है:-

मैं एक विनम्र इंसान नहीं हूँ। मैं ऊंचे पद और दौलत की ताकत वालों के आगे नहीं झुकता लेकिन जब ऐसे लोगों से मिलता हूं, जिन्होंने अपना जीवन बिमार और जरूरतमंद मनुष्यों और पशुओं की सेवा में समर्पित कर दिया है तो मैं बहुत नम्र महसूस करता हूँ। मदर टेरेसा की पुण्यतिथि (31 अगस्त) पर मुझे वे तीन दिन याद आए जो मैंने 40 साल पहले उनके साथ कलकत्ता में बिताए थे। हम भीड़-भाड़ भरी सड़कों पर चले, उनके अलग-अलग अस्पतालों और परित्यक्त बच्चों के क्रैच में जाने के लिए ट्राम में सफर किया। मैंने न्यूयॉर्क टाइम्स में उनके प्रति विनम्र आभार लिखा था और इलस्ट्रेटेड वीकली ऑफ इंडिया के मुखपृष्ठ पर उनकी तस्वीर भी प्रकाशित की थी। इसके पहले कलकत्ता के बाहर उन्हें बहुत कम लोग जानते थे। लेकिन उसके बाद तो बहुत सारे लोग उनके काम और उनकी समाज के बारे में जानने लगे। उन्होंने मुझे धन्यवाद का एक छोटा सा नोट लिखकर भेजा। वह अभी भी मेरे पास कसौली के घर में चांदी के फ्रेम में जड़ा रखा है।

समाजसेवी भगत पूरन सिंह के साथ भी यही हुआ। मैंने अमृतसर में उनके पिंगलवाड़ा (कुष्ठरोग गृह) के बारे में सुना। इस पर मैंने अपने परिवार के चैरिटेबल ट्रस्ट के सदस्यों को वहां के मरीजों के लिए एक भवन दान में देने के लिए कहा। तत्कालीन वित्त मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने तब उस भवन का उद्घाटन किया था।

यद्यपि एक राजनीतिज्ञ के रूप में मेनका गांधी के लिए मेरे मन में कोई बहुत ज्यादा सम्मान नहीं है, लेकिन मैं उन्हें इस बात का पूरा श्रेय देता हूँ, कि वह हमारे देश की ऐसी पहली भारतीय हैं, जिन्होंने देशवासियों को हमारे पशुओं की रक्षा व उनकी देखभाल के प्रति सचेत किया।

मेनका गांधी के अलावा भी मेरे आस-पास ऐसे कुछ लोग और भी हैं जो पशुओं या इंसानों से

सरोकार रखते हैं। कूचबिहार के भीम वर्मा (महारानी गायत्री देवी के भतीजे) अपनी शामें आवारा कुत्तों को खाना खिलाने में व्यतीत किया करते थे। उनकी मृत्यु के बाद उनकी पत्नी रीता देवी ने यह दायित्व संभाला। उससे भी बढ़कर अब वह दो चलायमान क्लीनिक चलाती हैं, जिसमें से एक कपिल सिब्बल ने दान दिया था और दूसरा सर फिटन जॉन ने। यह दोनों क्लीनिक डॉक्टरों, नर्सों और दवाइयों के साथ शहर के अलग-अलग हिस्सों में जाते हैं और बीमार लोगों का मुफ्त में इलाज करते हैं। पोद्दार अंसल ने भी उन्हें एक-एक और क्लीनिक देने का वादा किया है। कुछ महीनों के भीतर वह चार चलायमान अस्पताल चला रही होंगी, जो प्रतिदिन करीब दो हजार लोगों का इलाज करेंगे।

मेरी भतीजी वीना बलवंत सिंह खाने और दवाइयों के पैकेट लेकर नई दिल्ली के अलग-अलग हिस्सों में इधर-उधर भटकते कुत्तों को खिलाती है और उनका इलाज करती है। इसमें काफी खर्चा भी आता है। अब उसकी एक दोस्त आधा खर्च बांटना चाहती हैं। शाम को घर जाने से पहले वह केंद्रीय लोकसेवा आयोग की परवीन तलहा के पास जाती हैं, जो लोदी पार्क में आवारा कुत्तों को खाना खिलाती हैं।

ऐसे हजारों दयालु स्त्री-पुरुष होंगे, जिनके लिए बीमार और भूखे मनुष्यों और पशुओं की सेवा करना बहुत पवित्र कर्तव्य है। मैं ऐसा कोई काम नहीं करता। सिर्फ उनके बारे में लिखता हूं। लेकिन मैं उनकी मौजूदगी में बहुत विनम्र महसूस करता हूं।"

खुशवन्त सिंह जी के यह भाव विचारणिय हैं। विनम्रता किसी के वास्तविक गुण के आगे झुकाती है और उसका अनुकरण करने के लिए प्रेरित करती है। लेकिन चापलूसी के लिए विम्रता का ढोंग मनुष्य को कपटी बना देता है। एक 2 जन की उदाहरण मेरे सामने आ रही है कि कैसे वह अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए एक 2 जन के आगे झुकते है, उनकी सेवा करते हैं, उन्हें भेंटें देते हैं, परन्तु पीठ पीछे उनके विषय में ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हैं, जो सुनकर हैरानी आती है। मनुष्य की अपनी झूठी प्रशंसा सुनने की लालसा, उसे यह सोचने ही नहीं देती कि इस चापलूस की विनम्रता का अर्थ क्या है। परिणाम यह होता है कि ऐसे झुककर सलामें मारने वाले, अपने उल्लू सीधा करते रहते हैं, अपने परिवारों के लिए ऐसी ऐसी सहूलियतें ले लेते हैं कि जो कोई आत्म सम्मान रखने वाले नजर के लिए सम्भ्व नहीं होती। आत्म सम्मान रखने वाला व्यक्ति झूठी विनम्रता दिखाकर अपना स्वार्थ सिद्ध नहीं कर सकता। सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि ऐसे जन अपनी संस्थाओं, समाजों और संगठनों में ऐसे ऐसे घिनौने कार्य करते रहते हैं जो चापलूसी कराने वाले जन अनदेखा करते रहते हैं, और संस्थान corruption का अड्डा बन जाते है। मनुष्य का मान बड़ाई वा घमंड का अधिकार न अपने सच्चे गुणों वा अवगुणों को देखने देता है और न ही दूसरों की स्वार्थी और झूठी विनम्रता को। इसलिए इस ओर सावधान रहने की अवश्यकता है।

सुरजीत बराड़

वैभव लक्ष्मी का व्रत

हिंदू देवियां पुस्तक प्रकाशकों के लिए विज्ञापन व प्रचार का काम भी करती हैं। एक उदाहरण छपा है साहित्य संगम, सूरत से प्रकाशित वैभव लक्ष्मी व्रत कथा की पुस्तक के पृष्ठ 19 पर, माजरा समझ में आ जाएगा। इस में शीला नाम की एक महिला को साक्षात लक्ष्मी मां ने कहा कि व्रत का उद्यापन होने पर उसे 7 कुंआरी कन्याओं को तिलक लगा कर सहित्य संगम प्रकाशन की 'वैभव लक्ष्मी व्रत' कथा की एक एक पुस्तक उपहार में देनी चाहिए। प्रकाशक महोदय से पूछा जा सकता है कि इस तरह का प्रचार लक्ष्मी मां से कराने के लिए खुद उन्होंने कितने व्रत रखे थे?

आप को शायद अब मेरे कहने का मंतव्य समझ में आ रहा होगा, व्रतउपवासों के मकड़जाल में फंसे हुए लोग इस बात की जहमत नहीं उठाते हैं कि जो व्रत वे रख रहे हैं उस की पुस्तक को ढंग से पढ़ कर उस का मनन कर सकें। वैभव लक्ष्मी व्रत कथा शुरू से अंत तक सिर्फ भोलेभाले लोगों को दिग्भ्रमित करने के अलावा कुछ नहीं करती है।

शुक्रवार व्रत कथा: सचाई से दूर अपनेआप में वैभव लक्ष्मी व्रत कथा केवल एक कथा भर है जिस में सचाई का तनिक भी अंश नहीं है। यह बात एक औसत स्तर का पाठक भी इस व्रत कथा की पुस्तिका को पढ़ कर समझ सकता है। कहानी की पात्र शीला नाम की एक महिला है जो अपने पति की गलत आदतों के कारण आर्थिक परेशानियों से घिरी हुई है। शीला बहुत धार्मिक महिला है और हर रोज मंदिर जा कर पूजा/आरती करती है। एक दिन उस के घर एक महिला आती है जो शीला के दुख का कारण पूछती है।

कथा के अनुसार यह महिला बदले हुए वेश में साक्षात लक्ष्मी माता होती है। शीला रोतेरोते अपनी कहानी बताती है। शीला की कहानी सुन कर वह महिला यानी लक्ष्मी माता उस का दुख दूर करने का उपाय बताते हुए शुक्रवार व्रत रखने की विधि समझाती है। कथा अनुसार जैसे ही शीला 21 शुक्रवार का व्रत पूरा करती है। उस के घर में धनधान्य की बहार आ जाती है, उस का पति सही रास्ते पर आ जाता है और उस का जीवन फिर से खुशियों से भर जाता है।

इस कथा को पढ़ कर कई सवाल उत्पन्न होते हैं जैसे कि वह क्या कोई देवी स्वयं आ कर अपने भक्त से यह कह सकती है कि तुम मेरी पूजा करो? यदि लक्ष्मी माता शीला से प्रसन्न हो कर उस के घर में स्वयं आई थी तो फिर शीला को व्रत रखने की क्या आवश्यकता थी? क्या लक्ष्मी माता अपनी सेवा करवाए बिना अपने भक्तों के दुखों को दूर नहीं कर सकती? और सब से महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है कि शीला के मात्र 21 शुक्रवार तक व्रत रखने से उस के सारे बिगड़े काम बन गए, जबकि इस देश में ऐसी करोड़ों शीलाएं हैं जो सैकड़ों शुक्रवारों का व्रत रख चुकी हैं लेकिन उन का कोई काम नहीं बना, ऐसा क्यों?

शीला कौन है

इस पुस्तिका के शुरू में लक्ष्मी के विभिन्न स्वरूप दिए गए हैं जिस में हर स्वरूप के नीचे लिखा गया है कि 'हे लक्ष्मी मां, आप जैसे शीला पर प्रसन्न

हुई वैसे ही सब पर प्रसन्न हों और सब की मनोकामना पूरी करें।'

यहां प्रश्न यह उठता है कि जिस शीला को इस पुस्तिका में इतना महिमामंडित किया गया है वह कौन है? यदि वह माता लक्ष्मी की इतनी अनन्य भक्त है तो उस का उल्लेख इस पुस्तिका के अलावा किसी भी अन्य पुस्तक या धर्मग्रंथ में क्यों नहीं मिलता जबकि हिंदू शास्त्रों और पुराणों में भगवान के अलावा उन के अनन्य भक्तों जैसे कि राम भक्त हनुमान, कृष्ण भक्त सुदामा, विष्णु भक्त प्रह्लाद आदि का विशेष वर्णन मिलता है तो फिर लक्ष्मी भक्त शीला की प्रविष्टि इस पुस्तिका के अलावा कहीं और क्यों नहीं हो पाती?

वास्तविकता यह है कि शीला का प्रमाण किसी पौराणिक ग्रंथ में मिल ही नहीं सकता क्योंकि यह पात्र आधुनिक युग के पंडितों की उपज है। जैसा कि इस कथा के पृष्ठ संख्या 14 पर शीला के पति के वर्णन से पता चलता है कि उसे शराब, जुआ, रेस, चरस, गांजा आदि की लत लग गई थी, ये सभी बुराइयां आधुनिक युग की ही देन हैं अन: यह निश्चित है कि शीला का कोई पौराणिक महत्त्व नहीं है।

शुक्रवार व्रत कथा प्रारंभ में अंत तक विराध ाभासों का एक दस्तावेज भर है। पुस्तिका में पृष्ठ संख्या 19 पर लक्ष्मी माता शीला से कहती हैं कि हर इन्सान को अपने कर्म भुगतने ही पड़ते हैं। अर्थात देवी माता खुद कर्म की प्रधानता का संदेश दे रही है जबकि अगले ही पृष्ठ पर वे कहती हैं माता लक्ष्मी का व्रत रखने से तुम्हारी मनोकामना पूरी होगी। यह कैसी कर्मप्रधानता है जिस में कर्म का अर्थ केवल व्रत रखना है? पृष्ठ संख्या 17 पर व्रत रखने की विधि में बताया गया है कि सोने के गहनों की विधिविधान से पूजा करनी चाहिए। यहां बात समझ में नहीं आती है कि यदि व्यक्ति के पास सोना ही होगा तो एसे व्रत रखने की आवश्यकता ही क्या है? क्या लक्ष्मी माता सोनेचांदी की चमक के बिना प्रसन्न नहीं होतीं? क्या लक्ष्मी माता के पास खुद सोने की कमी है, जो उन्हें अपनी पूजन की थाली में सोने का गहना देखने का लालच है?

लाटरी और जुए का समर्थन कैसे?

पुस्तिका के अंत में कुछ ऐसे कपोल कल्पित उदाहरण दिए गए हैं जो आप को लाफ्टर चैलेंज जैसी हंसी का एहसास करा सकते हैं। पहला ही उदाहरण नवसारी की किसी महिला (बिना नामपते वाली) का दिया गया है जिस में शुक्रवार व्रत रखने से उस की 50 रुपए की लाटरी लग गई। क्या इस उदाहरण से आप को ऐसा नहीं लगता कि मानो साक्षात लक्ष्मी माता कह रही हों कि भविष्य में यदि लाटरी या जुआ खेलना हो तो उस से पहले मेरा व्रत रखना, तुम्हें अवश्य लाभ होगा।

क्या इस तरह के उदाहरण लोगों को जुए और लाटरी की लत के लिए प्रोत्साहित नहीं करते हैं? इस के अलावा और भी 6 उदाहरण इस पुस्तिका में दिए गए हैं जिन में बताया गया है कि शुक्रवार का व्रत रखने से किसी व्यक्ति के खोए हुए हीरे वापस मिल गए तो किसी की बेटी की शादी हो गई। परंतु एक बात सभी में समान है कि इन उदाहरणों में जितने भी भक्तों का जिक्र किया गया है उन में से किसी का भी

पता नहीं दिया गया है।

विदेशी सप्ताह, भारतीय व्रत

मैं अकसर व्रत रखने वाली महिलाओं से यह प्रश्न करता हूँ कि सोमवार से ले कर रविवार तक जो महिलाएं व्रत रखती हैं (धन्य हैं वो पंडित जिन्होंने हफ्ते का एक दिन भी खाली नहीं छोड़ा) उन का पौराणिक महत्त्व क्या है और ये व्रत कब से प्रचलन में हैं। सभी महिलाएं बिना सोचेसमझे कहती हैं कि ये व्रत भारतीय परंपरा में हजारों वर्षो से हैं।

इन तमाम बातों का निचोड़ यह है कि कोई भी व्रत, उपवास या पूजा आप को लखपति नहीं बना सकता है। लक्ष्मी की साधना साधनों से नहीं बल्कि कठिन परिश्रम से की जाती है।

इस दुनिया में करोड़ों लोग बिना लक्ष्मी की पूजा किए धनवान हैं क्योंकि वे अपना कर्म कर रहे हैं। वहीं, करोड़ों लोग ऐसे भी हैं जो लक्ष्मी की पूजा करते हुए भी गरीबी को भोग रहे हैं क्योंकि वे बिना कर्म किए लाटरी खोलने वाली लक्ष्मी में विश्वास करते हैं।

(सरिता से संभार)

काम का नाश और ईमानदारी की लत

नैतिकता, सादगी और ईमानदारी का नशा एक बार लग जाए तो मुक्ति नामुमकिन होने लगती है। देश के किसी भी प्रांत का नाम गिनें,कमोबेश सभी वर्तमान व पूर्व मुख्यमंत्रियों के विरूद्ध भ्रष्टचार के सही-गलत आरोप पत्र दर्ज है। सभी अरोपों एवं जांच एजैंसियों के स्कैनर तले हैं। एक तथ्य यह भी है कि इस देश में प्राय: राजनेताओं को देर-सवेर आंशिक या पूरी राहत मिल ही जाती है। सबके पास असंख्य वाहन हैं मगर शपथ पत्रों में यही दर्ज है कि कोई वाहन नहीं है।

इसी परिवेश में इसी देश के एक प्रांत का मुख्यमंत्री ऐसा है जिसका बैंक बैलेंस मात्र 13,920 रुपये है। वह अपने घर-गुजारे के लिए अपनी पत्नी पर निर्भर है। पत्नी केन्द्रीय सरकार के एक कार्यालय में कार्यरत हैं। इस मुख्यमंत्री को अपने वेतन के रूप मं सिर्फ 9200 रूपए मिलते हैं। 1200 रुपए प्रतिमाह का भत्ता मिलता है। इस मुख्यमंत्री की पत्नी भी रिक्शा की सवारी को तरजीह देती है। यदि किसी समारोह में पति-पत्नी दोनों को जाना होता है तो मुख्यमंत्री सरकारी कार में जाते हैं मगर पत्नी औटो रिक्शा या साईकिल रिक्शा में जाती हैं। इस मुख्यमंत्री के पास न तो अपना मकान है न कोई वाहन और न ही कोई चल-अचल संपत्ति। वह आज भी कपड़े लत्ते व भोजन, पानी के लिए पत्नी के वेतन का मोहताज है। मगर वह ससम्मान सक्रिय है और सुखी है। 59 वर्षीय यह शख्स यानी त्रिपुरा के मुख्यमंत्री माणिक सरकार, तीसरी बार मुख्यमंत्री बने हैं। उनकी पार्टी के प्रवक्ता गौतम दास बताते हैं 'माणिक दा गजब के कामरेड हैं। न बीड़ी-सिगरेट न दारू और न मांसाहार, मगर काम का नशा ऐसा कि दिन-रात मस्त रहते हैं। वैसे ईमानदारी की लत पड़ जाए तो छूटती कहां है।'

पंजाब के वित्तमंत्री मनप्रीत सिंह बादल एक संपन्न परिवार से हैं। 'चांदी का चम्मच' मुंह

शेष पेज 20 पर

शुभ संग्राम

चण्डीगढ़ :- यहां पर ईतवार की सभाएं लगभग लगातार होती रही। 3 जनवरी को माता पिता सम्बन्धी विशेष साधन किया गया, वह बहुत प्रभावशाली हुआ। कड़कती सर्दी में श्रीमती विद्यावती जी भी तशरीफ लाई। हाजिर जन बहुत प्रभावित हुए। कईयों ने माता पिता सम्बन्धी अपनी कमियों और उनके उपकारों को अनुभव किया। जगदीष जी ने भाव विभोर होकर भजनों का गान किया। अन्त में सौभाग्यवान सन्तान ने अपने माता पिता का फूलों के हारों द्वारा अर्चन करके, उनके चरणों में प्रणाम किया। बड़ा ही स्वर्गिय दृष्य था (इसकी पूरी रिर्पोट प्रैस में कहीं गुम हो गई)।

पति पत्नी के सम्बन्ध में 28 फरवरी को सभा की गई। गुरू महाराज की इस रिश्ते के सम्बन्ध में शिक्षा वा कारज बताया गया। सभापति जी ने दिल के गहरे भावों से और भरे दिल से गुरू की कृपा से जो लाभ हुआ है, उसका वर्णन किया। अपनी कमियों की ओर भी ध्यान गया, बहुत सुन्दर वातावरण बना।

गोनियाना और महिमा सवाईः – यहां पर जाकर श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने सभाएं करवाई और बहुत प्रभावदायक सभाएं करवाई।

संगरूर में ठहरकर भी श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने कई सभाएं करवाई। लोकल जन आकर लाभ उठाते रहे।

महोत्सव पर छपी पुस्तकें सभी ने बहुत पसंद की। इस सम्बन्धी बहुत से फोन और अपने विचार पाठक गण भेजते रहे। श्रीमान गोकलचन्द जी गूना, पुस्तक "हृदय परिवर्तन" से प्रभावित होकर 50 पुस्तकें अपने शहर ले गए ताकि अधिकारी जन पढ़कर लाभ उठा सकें।

श्रीमान मुनशी राम जी मोगा भी इस पुस्तक से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने एक और पुस्तक मंगवाई। मिलने का भाव प्रगट किया। उन्होंने कहा कि मैं 100 - 100 रु0 इन दो पुस्तकों के और तीन सौ रु0 दान भेजता हूँ। उन्होंने 500 रु0 भेजे।

मल्लेका (सिरसा) 11 मार्च 2010 श्रीमान बलदेव सिंह जी चण्दीगढ़ से रवाना होकर कुछ समय के लिए मानसा डाक्टर सुबोध जी गुप्ता के परिवार को मिले। वहां मोगा से अवतार सिंह जी आकर उनके साथ शामिल हो गए। रात तक मल्लेका पहुंच गए, रात को नवनिर्मित मन्दिर में पहली सभा हुई। श्री गुरूदेव राज जी ने भजन गाया।

फिर सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया, नेचर क्या है, उसके चार जगत हैं जो प्रभाव छोड़ते है। इन्सानों में से अकसर नीच असर निकलते हैं। जो मनुष्य इन प्रभावों में घिर जाता है, वह उनसे प्रभावित होकर कुछ का कुछ बन जाता है। प्रभाव उसे अपने रंग में ढाल लेते हैं। उदाहरण देकर बताया, कि कैसे देव प्रभाव मनुष्यों के भीतर उच्च परिवर्तन पैदा करते हैं। नीच असरों से बचने वा देव प्रभाव दायक मण्डल में अधिक से अधिक रहने की अवश्यकता है। इस सभा में 65 के लगभग जन शामिल थे।

12.03.2010 – सुबह 8.30 बजेः – यह सभा भी श्रीमान बलदेव सिंह जी ने कराई।

श्रीमान गुरूदेव राज जी ने भजन गाया। गुरू महाराज जी का छवि द्वारा अर्चन किया। फिर सभापति जी ने बताया कि धर्म प्राप्ति तो दूर की बात है, पहले धर्म प्राप्ति के लिए दिल की अवस्था तैयार होनी चाहिए। सबसे पहले हृदयों में बड़ों के प्रति सम्मान होना चाहिए। उनके आगे दिल झुकना चाहिए। जैसे जैसे नम्र होकर झुकते जाएंगे, वैसे ही हृदय ध र्म प्राप्ति के लिए तैयार होगा। सभापति जी ने एक अन्धे, परन्तु गज़ब के सेवाकारी जन की घटना सुनाई और बताया कि उनके महान रूप के आगे झुक झुककर प्रणाम करके उन्होंने कितना लाभ उठाया है। सभापति जी ने और महान परोपकारियों की घटनाएं बताकर कहा कि उन्हें सजदा करने के लिए दिल चाहता है। उन्होंने बेहद सेवाकारी पशु वा जीवों का कुछ रूप वर्णन किया और हृदय झुकाया। फिर हाज़रीन से पूछा कि क्या किसी को कोई बड़ा नज़र आता है। दो तीन जनों ने कुछ उच्च जनों के गुणों का वर्णन किया। एक धर्म सम्बन्धी ने बताया कि फलां धर्म सम्बन्धी सच्चा देव समाजी है, जो हर समय, हररोज़ अनेक प्रकार की सेवा कर रहा है। मैं तो गप्पें मारकर समय बर्बाद कर देता हूँ। उनके सेवाकारी रूप का ब्यान करके झुककर उनको सच्चा सम्मान दिया। सब हाज़रीन सम्मान भाव से भर रहे थे। गुरू कृपा से बहुत स्वर्गिय मण्डल बन गया था।

सब गुरू को धन्यवाद दे रहे थे। एक सेवक ने सभा के बाद अपनी छोटे भाई और उसकी पत्नी के बारे में भरे दिल से महिमा गाई और यह कहकर कि ऐसी बीबी तो शायद पैदा ही न हो, ऐसा ब्यान किया जैसे श्रीमान जी को ही सभा करवा दी।

रात 8.30 बजेः – सभा में 75 - 80 के करीब हाज़री थी। इस सभा में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि मनुष्य नीच सुखों के कारण पापों और दुखों में फंसकर बर्बाद हो रहा है। पूजा, पाठ इन दुखों में से नहीं निकाल सकते। मनुष्य को नीच सुख पहले भयानक नज़र आने चाहिए, फिर उनसे मुक्त हो सकता है। गुरू महाराज अपनी ज्योति द्वारा नीच सुखों का भयानक रूप दिखाते हैं। उनके प्रति घृणा पैदा करते हैं, जिससे पापी जीवन बदल जाते हैं। गुरू महाराज का मिशन नेचर ने मानवता के लिए सुरक्षित रखा है। जो इसके अन्दर रहता है, वह सुरक्षित रहता है। कई जोरदार परिवर्तन सुनाए, जिससे हाज़रीन प्रभावित हो रही थी।

13.3.10 सुबह 9 बजे, की सभा में श्रीमान जी ने पिछले दिन की सभा के बारे में पूछा। फिर धर्म प्राप्ति के लिए हृदय की उपयोगी अवस्था बनाने की ठोस विधि बताई। महान जनों की महानता के आगे झुकना और उपकारियों की महानता को भी बताया। पन्ना जी बारे बताया। छोटे भाई ने अपने भाई को गुर्दा दे दिया और स्वंय मौत कबूल की। श्रद्धेय श्रीमान ईशवर सिंह जी के महान जीवन के विषय में बताया। कई और जनों ने भी दूसरों के गुणों के विषय में बताया।

1 बजे दुपहिरः – सन्त विवेकानन्द सीनियर सैंकण्डरी स्कूल केसूपुरा में यह सभा कराई गई। सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने यह सभा कराई। स्कूल स्टाफ वा बड़ी कलासों के बच्चे इसमें शामिल हुए। इस सभा में केसूपुरा वा मल्लेका के धर्म सम्बन्धी भी शामिल हुए। सभापति जी

बताया कि दूसरों के साथ ऐसा सलूक करो जो तुम चाहते हो कि दूसरे तुम्हारे साथ करें। दूसरों के प्रति संवेदनशील होकर ही कोई भले का कारज़ होता है। कई कृतज्ञ बच्चों के उदाहरण देकर माता पिता के प्रति सम्मान वा आज्ञापालन की अवश्यकता बताई गई। सबसे पहले सुबह माता पिता को प्रणाम करने की अवश्यकता बताई। सच्चा सम्मान भाव ध ारी अपने बड़ों का मजाक नहीं उड़ा सकता, औरों को भी इस बुरे काम से रोकता है। सारी सभा में बच्चों से भी प्रश्न करके शामिल रखा गया। सुबह प्रणाम करने की प्रेरणा दी। प्रिंसीपल साहिब सरताज सिंह जी ने ऐसी और सभाएं रखने का भाव प्रगट किया।

13.3.10 शाम 8.30 बजे :– यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने कराई। इसमें 90 से ऊपर जन शामिल थे। बताया गया कि हमारे प्रचलित धर्म तो सम्बन्धों को धर्म र्माग में बाधक समझते थे। इसीलिए सम्बन्धों को त्याग कर जंगलों में चले जाते थे, वहां परमात्मा की अराधना को धर्म समझते थे, देवात्मा सत्गुरू ने निराली शिक्षा दी है कि धर्म सम्बन्धों में उच्च जीवन का नाम है। सम्बन्धों के बिना न मनुष्य की उत्पत्ति है, न पालना, न रक्षा न ही शिक्षा प्रप्त हो सकती है। मानव सम्बन्धों की विकसित अवस्था सब मानव सम्बन्धियों की देन है। स्वामी रामतीर्थ बेशक महान हों, परन्तु उनका सम्बन्धों का त्याग अनुचित था। माता पिता, भाई बहन वा पति पत्नी के उच्च कोटि के उदाहरण प्रस्तुत किए गए। अध्यापिक और विद्यार्थियों के आदर्श सम्बन्ध के विषय में बताया गया। सभापति जी ने अपने जीवन में आए परिवर्तन के विषय में भी बताया। एक पब्लिक स्कूल के अध्यापिक ने इस सभा से बहुत लाभ उठाया। दो जनों ने परिवारिक खुशी को लेकर सब में मिठाई बांटी। नव निर्मित भवन पर लड़ियां लगाकर रोशनी की गई। इस प्रकार इस मन्दिर का उदघाटन समारोह किया गया।

14.3.10 – 8.30 बजे :– सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। सुबह के समय भी 50 से भी अधिक जन सभा में शामिल हुए। सभापति जी ने बताया कि नेचर में जो भी घटना होती है, वह नेचर के नियमों के अनुसार होती है। विद्या प्राप्ति के भी नियम हैं, उसी प्रकार धर्म की प्राप्ति के लिए पहले पापों और हानिकारक गतियों से मुक्त होना अवश्यक है। इसके भिन्न चार और नियम हैं। जो धर्म अभिलाषी को पूरा करने होते हैं। सत्संग में किसी भी कीमत पर शामिल होना, सेवा वा परोपकार करना, अपने जीवन के प्रति जाग्रति प्राप्त करने के लिए परम पू0 भगवान देवात्मा के देव प्रभावों को प्राप्त करने का प्रयत्न और उसका नियमित साधन करना, स्वैअध्यपन अर्थात उच्च पुस्तकों का पाठ करना आदि यह हितकर नियम हर धर्म अभिलाषी जन में पूर्ण होना अवश्यक है।

डबवाली

14.3.10 शाम 5.15 बजे डबवाली में सभा की गई। सभामति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। मल्लेका से श्रीमान बलदेव सिंह जी अपने कुछ साथियों के साथ डबवाली पहुंचे। सभा में आने के लिए कुछ अधिकारी जनों को सूचित किया। सभा में 30 – 35 के लगभग जन आए। सभापति जी ने बताया कि जीवन की हर अवस्था में रहनुमाई की

क्षमता परम पू0 भगवान देवात्मा के देव प्रभावों में है। कई राजनैतिक नेता, खिलाड़ी, कलाकार और धनवान ऐसा अनर्थ वा पाप कर बैठते हैं, जो क्षमा योग्य नहीं होता। मनुष्य अपने सुखों वा भावों से परिचालित होकर जीवन बर्बाद कर लेता है। महा हानियां और दुख उठाता है। पू. भगवान इन परिचालक भावों का रूप दिखाते हैं। बहुत सच्ची शिक्षाप्द उदाहरणें दी। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने दो लड़कियों की आत्मघात की शिक्षा प्रद उदाहरणें दी और विषय को और स्पष्ट किया। सब श्रोतागण बहुत प्रभावित हुए।

15.3.10 सुबह 8.30 बजे सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। यह सभा सतवन्त कौर जी के घर में की गई। इसमें सभापति जी ने बताया कि धर्म मनुष्य की तीन स्तरों में रक्षा वा सहायता करे तो ठीक रोल Play करता है, नहीं तो धर्म अपने रोल में फेल हो जाता है। धर्म का पहला स्तर मनुष्य को व्यक्तिगत लाभ पहुंचाना। उसकी सेहत, उसका दिमाग़ और उसके चरित्र की रक्षा करना और उसे ऊंचा उठाना। उसे नीच अभ्यासों से मुक्त करके उच्च कारजों में लगाना। दूसरा स्तर है उसके अपने परिवार में मेल और रस पैदा करके परिवारिक जीवन को सुख शान्ति, विकास करने के योग्य बनाना। धर्म का तीसरा स्तर है उसे समाजिक सेवा में लगाने के लिए प्रेरणा करना और सेवा करने के योग्य बनाना। देव धर्म इन तीनों स्तरों पर अपना सच्चा योगदान पा रहा है। उसका उदाहरणों सहित वर्णन किया गया। परिवारिक जनों को बार बार ऐसे धर्म साधन रखने की प्रेरणा की।

शाम 5.15 बजे सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। इस सभा में बताया गया कि मनुष्य के विकास वा विनाश में उसकी विरासत वा जन्मजात स्वभाव कारण बनता है। दूसरा कारण उसका वातावरण है, जिससे वह घिरा हुआ है। देव धर्म ऐसा वातावरण प्रदान करता है, जो उसमें ऐसे बोध पैदा करता है कि उसके जीवन मुल्य बदल जाते है। सरदार हरनाम सिंह जी और डा0 हरनाम सिंह जी के परिवर्तित जीवन की दिल को छूने वाली झलकियां ब्यान की जो दिलों को बहुत प्रभावित कर रही थी।

16.3.10 सुबह 8.30 बजे - सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। सभापति जी ने बताया कि धर्म क्या है? सच्ची अराधना क्या है? केवल पूजा, पाठ या अराधना धर्म नहीं। धर्म अच्छे बनने वा अच्छे व्यवहार करने का नाम है। अच्छे व्यवहार, अच्छे भावों से उपजते हैं। जिस मनुष्य द्वारा जान, माल, किसी की इज्ज्त, सम्मान सुरक्षित है, वह धर्मवान है। ईमानदारी, पवित्रता, हमदर्दी आदि भाव धर्म के भाव है। इन भावों को अपने भीतर पैदा करना वा दूसरों के भीतर पैदा करना धर्म का कारज है।

परम पू0 भगवान देवात्मा मनुष्य को ईमानदार, हमदर्द, सेवाकारी वा शुक्रगुज़ार बनाते है। सभापति जी ने बताया कि मांसाहार द्वारा, हमदर्दी, इन्साफ वा शुक्रगुज़ारी के भावों का नाश होता है। बीबी सतवन्त कौर जी के परिवार ने बड़ी सहायता की है। श्रीमान सुन्दरलाल जी की बहन का परिवार भी बहुत सहायता करता रहा है और सभाओं में आकर लाभ उठाते है। 10.45 पर यह प्रभावशाली सत्संग समाप्त हुआ।

पाठकों के विचार

कानपुर से शिव मंगल परिहार साहिब Retd. Principal लिखते है :- भाई बलदेव साहिब जी दिल झुकाकर नमन करते हैं। आपका "धर्म जीवन" बराबर समय पर रहा है। देव धर्म के क्षेत्र में महा बाहु (अर्जुन) आपके हिम्मत भरपूर काम के लिए दिली बधाई और धन्यवाद।"धर्म जीवन" को पाकर बड़े चाव के साथ पढ़ता हूँ। दिसम्बर के धर्म जीवन में श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी की साफ ब्यानी पढ़कर, अत्यन्त खुशी प्राप्त हुई। उससमें गुरू महाराज के प्रति उनकी श्रद्धा वा दिवानगी के निराले पन की झलक मिलती है। उन्होंने मनुष्य की हैवायनियत को जिस प्रकार देखा है, ऐसा कहीं दिखाई नहीं देता। धन्य हैं गुरू महाराज! इस पक्ष में आपकी बहादुरी, हिम्मत और खिदमत कोई कम महसूस नहीं होती। मैं भी आखरी उमर में आपका सम्पर्क पाकर धन्य धन्य हो गया हूँ।

अम्बाला से एक माननिय सेवक लिखते हैं। मानविय श्रीमान जी, सत्य देव की जय और प्रणाम। आपकी भेजी हुई पुस्तक 24 श्रद्धावानों के हृदय परिवर्तन की घटनाएं बहुत ही मार्मिक और सुन्दर ढंग से दी गई हैं। उन्हें पढ़कर हृदय उच्च रस से विभोर हो उठा। आपके स्नेह, आशीर्वाद और कृपा का तो मैं पहले ही कायल हूँ। इस पुस्तक के भेजने के लिए मैं दिली धन्यवाद करता हूँ।

आप जो समय समय पर कृपा करते रहते हो "देवत्व किरणे" आदि पुस्तके भेजते रहते हो, उनको पढ़कर बहुत अच्छा लगा, बहुत उच्च प्रभाव मिले। "धर्म जीवन" पत्रिका में बहुत सुन्दर सरूचि पूर्ण और उच्च प्रभाव दायक लेखों की बदौलत मुझ को सभाएं करवाने के लिए बहुत अमुल्य समग्री आसानी से प्राप्त हो जाती है।

सन 2009 की महोत्सव की विस्तार सहित रिर्पोट पढ़ी, बहुत ही ज्ञानवर्धक, देव प्रभाव दायक थी, जिससे उच्च रस मिलता था। इन सब उपकारों और अन्य मेहरबानियों के लिए दिली धन्यवाद करता हूँ।

माननिय श्रीमान जी। पिछले कई दिनों से बार 2 यह भाव उठ रहा था कि मुझे अपनी अविज्ञाओं, और दुष्टताओं के लिए आपसे क्षमा मांगनी चाहिए। आपको तो शायद याद भी न हो मैंने आप को बड़े कठोर शब्दों में कहा था कि कभी भूलकर भी मेरा नाम अपनी पत्रिकाओं में न छापना। मेरा विचार था कि देव समाज का वफादार सेवक रहकर ही ग़ल्त बातों का विरोध करूंगा। मुझे दुख है कि आप जैसे उच्च शिक्षा प्राप्त, तजरबेकार, समाज के सच्चे वफादार, कर्मठ कर्मचारी के सम्बन्ध में अपने आत्मा का घात करने वाली और अपमान करने वाली गति की, मैं इस के लिए दिल से क्षमा मांगता हूँ कि मेरी अविज्ञाओं और ग़्लतियों को दरगुज़र करके आप मेरे प्रति अपना स्नेह वा कृपा बनाए रखना।

माननिय श्रीमान जी! वैसे तो आप मेरे किसी भी समर्थन और सहायता के मोहताज नहीं, परन्तु जो आप अधिकारी दिलों वा आत्माओं को उच्च वा आला बनाने का काम कर रहे हो, वह बहुत ही प्रशंसनिय और प्रेरणा दायक है। मैं उसका तह दिल से धन्यवाद करता हूँ, आपको दिली मुबारकबाद देता हूँ।

धन्यवाद सहित आपका उपकृत

पेज 14 का बाकी

में था, जब जन्मे थे। दिखावे व नुमायशी जिंदगी से इन्हें सख्त नफरत है। अब भी अपनी गाड़ी स्वयं ड्राइव करते है, न कोई गनमैन, न एस्कार्ट। वक्त मिले तो खूब पढ़ते हैं। अपने क्षेत्र के मतदाताओं को साफ पेयजल (आरओ) पिलाने के बाद अब सिर्फ 30 रुपए में सर्वश्रेष्ट डॉक्टरी मशविरा वीडिया कॉफ्रेंसिंग पर मुहैया करा रहे हैं। इसी श्रृंखला में रेलमंत्री ममता बनर्जी, प्रतिरक्षा मंत्री एके एंटनी, भाकपा नेता डी राजा और बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार आदि हैं। ममता अपनी 80 प्रतिशत यात्राएं रेल से करती हैं। मध्यप्रदेश की युवा सांसद मीनाक्षी नटराजन औटो रिक्शा पर संसद जाती हैं, और दक्षिण दिल्ली में किराए के मकान में रहती हैं। डी राजा चंडीगढ़ के पंजाब के पंजाब बुक सेंटर पर अक्सर देखे जा सकते हैं। संसद जाने के लिए कार का प्रयोग करते है। मौका मिलने पर स्थानीय बस पर भी चढ़ जाते हैं। प्रतिरक्षा मंत्री एंटनी मोबाइल फोन का प्रयोग नहीं करते। त्रिवेंद्रम में अपने दो कमरे का किराए का मकान अभी भी खाली नहीं किया है। उनकी पत्नी व बच्चे बसों व ऑटो रिक्शा पर सफर करते हैं। वैसे प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह भी सादगी के लिए चर्चित हैं। विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के शीर्ष पुरुष के पास भी मोबाइल फोन नहीं हे। एक कार है मारुति-800 जिसे चलाकर स्वयं रजिस्ट्रेशन के नवीकरण के लिए जाते हैं। वैसे हाईफाई राजनेता इन बातों पर विश्वास नहीं करते।

शोक समाचार

बहुत शोक है कि श्रीमान शुभदेव जी पुत्र श्रीमान मास्टर इन्द्र सिंह जी, शादीपुर नगला का 23 मार्च 2010 को अचानक देहान्त हो गया है। उनका दाह संस्कार और श्राद्ध का साधन देव समाज विधि के अनुसार उनके गांव में 31 मार्च 2010 को किया गया।

बलदेव सिंह, मन्त्री

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर*

म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts